E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

ग्वालियर क्षेत्र के पर्यटन का आर्थिक विकास में योगदान

डॉ. सीताराम सिंह तोमर

प्राचार्य, महाराजा मानसिंह महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.14314852

भारत एक प्राचीन देश है। यहाँ की संस्कृति हजारों वर्ष पुरानी है। यहाँ सांस्कृतिक सद्भावना का मुख्य केन्द्र धर्म प्रारम्भ से रहा है। भारत एक विविधता सम्पन्न देश है। यहाँ पर न केवल भौगोलिक रूप से विविधता है बल्कि दूसरी ओर धर्म मत आस्था आदि अनेक बिन्दुओं पर मतान्तर है। भौगोलिक रूप से जहाँ एक ओर पहाड़ों से घिरे क्षेत्र हैं वहीं दूसरी ओर समुद्र से घिरे इलाके हैं। साथ ही साथ ऐसे भी इलाके हैं जिनसे न समुद्री सीमायें पास हैं और ना ही वहां पर पठारी इलाके हैं। इसी प्रकार यहाँ पर अनेक धर्म प्रेमी रहते हैं। चाहे वे हिन्दू सम्प्रदाय के लोग हों या फिर मुस्लिम सम्प्रदाय या सिक्ख सम्प्रदाय, ईसाई, बौद्ध या जैन सम्प्रदाय, अनेक प्रकार के सम्प्रदायों में भी अनेक अन्य मत मतान्तर है। इसी कारण से यहाँ विविधता में एकता की बात कही जाती रही है परन्तु यहाँ की समस्त जनता प्रारम्भ से ही कला, साहित्य, संगीत एवं प्राकृतिक धरोहरों में स्नेह रखती थी, इसी कारण से प्रारम्भ से अभी तक सभी शासक मूल रूप से कला, साहित्य, संगीत सम्बर्द्धन में विशेष योगदान देते रहे हैं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण यहाँ के शासकों के महल, किले या अन्य वास्तुकला सम्पन्न इमारतें हैं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण यहाँ के शासकों ने सदा से ही कला, साहित्य, संगीत सम्बर्द्धन में विशेष सहायता प्रदान की है। इसी सहायता से भारतवर्ष की संस्कृति में एक विशेषता प्रदर्शित होती है। प्रकृति ने भारत वर्ष को अनेक उपहार दिये हैं, इसी से भारतवर्ष प्राकृतिक रूप से काफी सुन्दरता लिए हुए है। इन सब कारणों से यहाँ पर पर्यटन की अनेक सम्भावनायें हैं ग्वालियर नगर भी पर्यटन की दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण है।

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

अध्ययन के उद्देश्य

1. प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य ग्वालियर तथा उसके समीपवर्ती क्षेत्रों में पर्यटन विकास की बाधाओं का अध्ययन करना।
2. पर्यटन की सम्भावनाओं का पता लगाकर पर्यटन के आर्थिक विकास हेतु रूपरेखा तैयार करना।
3. ग्वालियर एवं उसके समीपवर्ती पर्यटक स्थलों की जानकारी का अध्ययन करना एवं उसके महत्त्व की जानकारी प्राप्त करना।
4. पर्यटन स्थलों पर हो रहे पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।
5. अध्ययन क्षेत्र में विद्यमान ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक पर्यटन स्थलों का पता लगाकर उसकी जानकारी से शासन एवं पर्यटकों को अवगत कराना।
6. ग्वालियर एवं समीपवर्ती क्षेत्रों में पर्यटन के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का मूल्यांकन करना।

ग्वालियर नगर का परिचय

नगर जिस प्रशासनिक प्रादेशिक इकाई में स्थित है उस इकाई की सभ्यता, संस्कृति और परम्पराओं का प्रभाव उस नगर के चरित्र पर बहुत अधिक पड़ता है। ग्वालियर समुद्र तट के लगभग 300 मीटर ऊँचाई पर बसा एक सुन्दर शहर है। यह भारत की राजधानी दिल्ली से 320 कि.मी. दूर दिल्ली में सुदूर दक्षिण तक जाने वाले रेल मार्ग पर स्थित है। यह तीन ओर से घोड़ों की नाल के आकार में स्थित खूबसूरत पहाड़ियों की घाटी में बसा रमणीक शहर है। यह तीन उपनगरों लश्कर जिसे ग्वालियर किले के दक्षिण की ओर दौलतराव सिंधिया ने सन् 1810 में बसाया था, मुरार जो किले के पूर्व में अंग्रेजी केन्टोनमेन्ट के बसने से बसा तथा पुराना ग्वालियर जो किले के उत्तर में है तथा जो इस क्षेत्र के मध्य युगीन इतिहास का साक्षी है, से मिलकर बना है।

ग्वालियर महानगर का जहाँ एक पुरातन इतिहास है वहीं पर्यटन के हिसाब से भी यहाँ पर अनेक सम्भावनायें हैं जो निम्न प्रकार हैं –

(1) ग्वालियर का किला

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

ग्वालियर एक पुरातन नगरी है। इसके प्रारम्भ से अनेक शासक यहाँ पर शासन कर चुके हैं। शासन व्यवस्था को ठीक से चलाने के लिए आवश्यक था कि एक बेहतर किला हो, इसलिए ग्वालियर दुर्ग का निर्माण पहाड़ी पर किया गया। महाराजा मानसिंह तोमर ने इस किले को वर्तमान स्वरूप में पहुँचाया। महाराजा मानसिंह तोमर के उपरान्त सिंधिया शासकों ने भी इस किले को और बेहतर बनाया। पर्यटन के हिसाब से इस किले में अनेक सम्भावनायें हैं। किले पर होने वाला लाईट एवं साउण्ड कार्यक्रम पर्यटकों को काफी आकर्षित करता है।

(2) जयविलास पैलेस

सिंधिया शासकों ने इसका निर्माण करवाया। यहाँ का दरबार हॉल अनेक विशेषताओं से परिपूर्ण है। यहाँ रखी चाँदी की ट्रेन जो खाना परोसने के काम आती है, अपने आप में अद्वितीय है।

(3) कोटेश्वर, गुप्तेश्वर मंदिर

ग्वालियर महानगर में अनेक शिवालय हैं, परन्तु यहाँ दो मंदिर अति प्राचीन हैं। वास्तुकला एवं शिवलिंगों के आकार के कारण यह पर्यटकों को काफी आकर्षित करते हैं।

(4) सूर्य मंदिर

बिड़ला जी ग्वालियर में अनेक मिल संचालित उद्योगपति हैं। उन्हीं ने कोणार्क सूर्य मंदिर से मिलता–जुलता सूर्य मंदिर ग्वालियर में बनवाया। यह भी पर्यटकों को काफी आकर्षित करने वाला रहा है। इस मंदिर की अनेक विशेषतायें हैं।

पर्यटन विकास का आर्थिक विकास में योगदान

जैसा पूर्व में ही बताया जा चुका है कि पर्यटन एक व्यवसाय है और किसी भी व्यवसाय का अगर विकास होता है तो निश्चिय ही इससे आर्थिक विकास में एक महत्त्वपूर्ण योगदान मिलता है। पर्यटन से आर्थिक विकास के जिन पहलू को लाभ होता है, वे भिन्न हैं –

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

1. रोजगार में वृद्धि

पर्यटन रोजगार वृद्धि में सहायक है। पर्यटन से अनेकानेक प्रकार के रोजगार निर्मित होते हैं। जैसे होटल व्यवसाय से जुड़े रोजगार, गाइड एवं सूचना केन्द्र सम्बंधी रोजगार, संचार, परिवहन सम्बंधी रोजगार आदि अनेक–अनेक प्रमुख पर्यटन केन्द्रों पर आज रोजगार लगभग 100 प्रतिशत पर पहुँच गया है अर्थात् वहाँ पर बेरोजगारी की स्थिति लगभग समाप्त हो गयी है। रोजगार वृद्धि निश्चिय ही प्रति व्यक्ति आय को भी बढ़ाता है एवं आर्थिक विकास में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

2. व्यवसाय को बढ़ावा

पर्यटन से अनेकानेक व्यवसायों को लाभ होता है एवं इससे हजारों युवाओं को लाभ मिलता है। ये व्यवसाय निम्नलिखित हैं –

(अ) होटल व्यवसाय

पर्यटन का होटल व्यवसाय को सीधा लाभ मिलता है एवं यहाँ पर लाभ की स्थितियाँ निर्मित होती हैं।

होटल व्यवसाय से अनेक व्यवसाय और भी जुड़े हुए होते हैं, उन्हें भी होटल व्यवसाय की वृद्धि का लाभ प्राप्त होता है।

(ब) माल वाहन व्यवसाय

पर्यटन विकास का लाभ होटल व्यवसाय के अतिरिक्त सर्वाधिक रूप से मालवाहक व्यवसाय को भी होता है। जब पर्यटक एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते है तो साथ ही अपना रोजमर्रा का सामान भी साथ ले जाते हैं एवं पर्यटन के साथ–साथ वह खरीद भी करते है। जिसके कारण से माल एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता रहता है और इस व्यवसाय को लाभ होता है।

(स) संचार व्यवसाय

पर्यटन के लिए संचार सुविधायें भी सहायक हैं। अतः इसके उत्थान से संचार व्यवसाय को भी अनेक लाभ होते हैं।

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

(द) क्रय–विक्रय व्यवसाय

पर्यटन के साथ–साथ क्रय–विक्रय लगभग आवश्यक अंग की तरह कार्य करते हैं। व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता है तो निश्चिय ही आवश्यक आवश्यकता, विलासिता एवं अन्य वस्तुओं का क्रय करता है। इस कारण से क्रय–विक्रय व्यवसाय को लाभ होता है।

(इ) कला, संगीत एवं साहित्य व्यवसाय

पर्यटन से न केवल संस्कृति का आदान–प्रदान होता है बल्कि कला, संगीत एवं साहित्य का भी व्यवसाय काफी फैलता है और प्रत्यक्ष रूप से लाभ कमाता है। इस व्यवसाय से अनेक लोगों को जहाँ रोजगार मिलता है वहीं बड़ा बाजार मिलने के कारण उन्हें लाभ भी प्राप्त होता है।

(फ) मनोरंजन व्यवसाय

पर्यटन मनोरंजन व्यवसाय को भी काफी बढ़ावा देता है। हमारी लोककला सिनेमा, टेलीविजन आदि मनोरंजन के मुख्य साधन माने जाते हैं जिन्हें पर्यटन से काफी लाभ होता है।

3. प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि

पर्यटन सीधे तौर पर प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करता है। चाहे वह रोजगार में वृद्धि करके या फिर व्यवसाय से होने वाले लाभ के कारण प्रति व्यक्ति आय निश्चित तौर पर बढ़ती है और व्यक्ति में ज्यादा क्रय शक्ति को बढ़ाती है, जिससे न केवल व्यक्ति की आय बढ़ती है बल्कि आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ होती है।

4. सकल उत्पाद में वृद्धि

पर्यटन विकास सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि में भी सहायक है, इस कारण से आर्थिक विकास भी सम्भव हो जाता है।

ग्वालियर नगर में पर्यटन विकास न होने के कारण

ग्वालियर एवं उसके समीपवर्ती क्षेत्रों में प्राकृतिक सौन्दर्य, ऐतिहासिक विरासत, धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व के पर्यटन स्थलों तथा परम्परागत उत्सवों, त्यौहारों एवं महोत्सवों की बजह से पर्यटकों के लिए आकर्षण का

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

मुख्य केन्द्र हो सकता है। ऐसी उपयुक्त दशाओं के चलते विन्ध्य की वादियों में बसे इस क्षेत्र को एक आदर्श पर्यटन केन्द्र बनाया जा सकता है किन्तु कई कारणों से ऐसा नहीं हो सका है। अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन के विकास के मार्ग में आने वाली मुख्य बाधायें निम्न हैं –

(1) सुविधाओं का स्तरीय न होना

ग्वालियर नगर में पर्यटन के अनुसार न ही होटल सुविधायें स्तरीय हैं और ना ही यहाँ पर यातायात संचार आदि सुविधायें भी स्तरीय हैं। होटल व्यवसाय में अनेक होटल यहाँ पर कार्यरत हैं परन्तु इन सभी में स्तरीय सुविधाओं का स्पष्ट तौर पर अभाव है। यह सभी होटल औसत से भी कम दर्जे की सुविधायें उपलब्ध कराते हैं एवं पैसा काफी ज्यादा वसूलते हैं, इसी प्रकार यहाँ पर सड़क यातायात की समस्त व्यवस्थायें औसत दर्जे से भी आधी हैं, बसें काफी खराब हालत में हैं साथ ही सड़कें उनसे भी बुरी स्थिति में हैं। इसी प्रकार टैक्सी काफी कम एवं खराब स्थिति में हैं। बाकी सुविधाओं का भी काफी खराब हाल है।

(2) स्पष्ट नीति का अभाव

मध्यप्रदेश पर्यटन विकास निगम एवं ग्वालियर महानगर प्रशासन के पास ग्वालियर पर्यटन विकास हेतु कोई भी नीति नहीं होने के कारण यह नगर विदेशी एवं देशी पर्यटकों को आकर्षित नहीं कर पाता है। माधवराव सिंधिया के प्रारंभिक प्रयासों से ग्वालियर, शिवपुरी, खजुराहो के साथ एक त्रिकोण बनाकर पर्यटन का विकास सोचा गया था मगर उक्त नीति भी ठीक से नहीं बढ़ाई गई जिसके कारण उक्त महानगर का पर्यटन विकास आज भी संभव नहीं हो पा रहा है।

(3) विज्ञापन नीति का अभाव

ग्वालियर नगर में पर्यटन विकास हेतु किसी भी प्रकार की विज्ञापन संबर्धन नीति नहीं बनाई गयी इस कारण जहाँ उचित नीति का अभाव था वहीं इस व्यापार हेतु इच्छा शक्ति अभाव एवं राजनैतिक वातावरण भी था। विज्ञापन नीति के अभाव में इस व्यवसाय का उचित विकास संभव नहीं हो पाया।

(4) मौसम का उचित न होना

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

ग्वालियर नगर का मौसम पर्यटन विकास में सहायक नहीं है। यहाँ गर्मी के मौसम में अत्यधिक गर्मी रहती है जब पारा लगभग 48 डिग्री तक पहुँच जाता है, वहीं दूसरी ओर सर्दी भी अत्यधिक पड़ती है जिसमें तापमान लगभग 0 डिग्री या उससे भी कम हो जाता है, साथ ही साथ बारिस के मौसम में बारिस भी काफी होती है।

(5) सुरक्षा व्यवस्था का ठीक नहीं होना

ग्वालियर नगर एवं इसके आसपास का इलाका कानून व्यवस्था के बिगड़े स्वरूप के लिए जाना जाता है। यहाँ पर आपराधिक ग्राफ काफी अधिक रहता है, प्रत्येक दिन अनेक गैर कानूनी गतिविधियाँ होती रहती हैं। इन सभी कारणों से पर्यटन विकास पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। कानून व्यवस्था में सुधार न कर पाने के कारण बाहरी पर्यटक यहाँ अपने को असुरक्षित मानते हैं।

(6) ऐतिहासिक धरोहर का रखरखाव

ग्वालियर नगर में काफी ऐतिहासिक धरोहर है। इनमें से कुछ राष्ट्रीय स्मारक हैं जिनका रखरखाव पुरातत्व विभाग द्वारा किया जाता है, परन्तु विभाग की उपेक्षा एवं यहाँ के नागरिक का खराब व्यवहार ऐतिहासिक धरोहर को नुकसान पहुँचा रहा है।

(7) परिवहन की समस्या

पर्यटन विकास का सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व है पर्यटन स्थल तक पहुँचने की सुगमता, किन्तु अध्ययन क्षेत्र में इस तत्त्व का अभाव है, विदेशी पर्यटकों के लिए वायु परिवहन की आवश्यकता होती है किन्तु ग्वालियर में इस सेवा का लगभग अभाव है इसके पश्चात् समीपवर्ती पर्यटन केन्द्रों तक आने–जाने के लिये सड़क मार्ग अत्यन्त खराब स्थिति में हैं। अतः पर्यटक वहाँ जाना पसन्द नहीं करते हैं।

(8) प्रचार–प्रसार संबंधी समस्या

वर्तमान में पर्यटन के विकास में प्रचार–प्रसार का महत्त्वपूर्ण स्थान है, पर्यटन में विज्ञापन या प्रचार पर्यटन विकास के वे माध्यम हैं, जिनकी सहभागिता से पर्यटकों को किसी स्थान क्षेत्र या देश के पर्यटन की ओर आकर्षित किया जा सकता है। वर्तमान में पर्यटन प्रचार के माध्यम में टेलीविजन, रेडियो, पोस्टर, पत्र–पत्रिकायें,

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

फोल्डर, प्रेस से मिलिये कार्यक्रमों, प्रदर्शनियों एवं महोत्सवों का आयोजन आदि है, किन्तु इनका ग्वालियर सहित सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में अभाव है।

(9) प्रशिक्षित कर्मचारियों का अभाव

ग्वालियर सहित सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के सम्पूर्ण पर्यटक स्थलों पर प्रशिक्षित कर्मचारियों एवं गाइडों का अभाव होना पर्यटन विकास में एक बड़ी बाधा है।

पर्यटन विकास हेतु सुझाव

भारतीय पर्यटन उद्योग को विश्वस्तरीय पर्यटन के रूप में स्थापित करने के लिये वर्तमान स्थिति में सुधार का प्रयत्न करना आवश्यक है। निम्नलिखित सुझावों पर अमल करने से निश्चिय ही विश्व पर्यटन में भारत की सहभागिता बढ़ सकेगी –

1. स्थानीय लोगों के लिये पर्यटन प्रशिक्षण की व्यवस्था करना।
2. नियोजित विकास हेतु वित्तीय निवेश की व्यवस्था।
3. पर्यटन स्थलों पर आधारभूत सुविधाओं की उचित व्यवस्था कराना।
4. देश के पर्यटन स्थलों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार–प्रसार कराना।
5. ग्रामीण पर्यटन स्थलों को पर्यटन नक्शे पर लाया जाये।
6. पर्यटन स्थलों पर आधारभूत सुविधाओं की उचित व्यवस्था कराना।
7. प्राकृतिक स्थलों को पर्यटन के लिये प्रोत्साहित करना।
8. पर्यटन के क्षेत्र में नई तकनीकी जोड़ना।
9. पर्यटन स्थलों पर सुरक्षा की उचित व्यवस्था करना।
10. पर्यटन स्थलों पर यातायात की पूर्ण व्यवस्था करना।

पर्यटन विकास की सम्भावनायें

वर्तमान समय में पर्यटन उद्योग एक वृहद उद्योग के रूप में उभर रहा है, अध्ययन क्षेत्र में इस उद्योग के विकास की अपार सम्भावनायें हैं, आवश्यकता है तो मात्र उन्हें नियोजित करने की। मध्यप्रदेश के इस उत्तरी

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

अंचल में जहाँ चम्बल के बीहड़ों की प्राकृतिक छटा है तो चम्बल में पाये जाने वाले घड़ियाल, डॉलफिन जैसे अनेक जीव–जन्तु हैं, कूनों जैसे अभ्यारण्य हैं तो दूसरी ओर ऐतिहासिक दुर्गों, गढ़ियों, महलों की अद्वितीय वास्तुकला है, वहीं अति प्राचीन त्रेता युगीन मंदिर भी हैं, यहाँ की सांस्कृतिक विरासत, मेले, उत्सव, महोत्सव भी आकर्षण के केन्द्र हैं। हमें इन सभी पर्यटन आकर्षणों का मात्र प्रचार–प्रसार करना है तथा पर्यटकों के लिये अच्छे यातायात के साधन, उच्च स्तर की आवासीय सुविधाओं का विकास करना है। पर्यटन क्षेत्र में लोगों को पर्याप्त सुरक्षा उपलब्ध कराकर उनमें व्याप्त असुरक्षा की भावना को दूर करना है, मनोरंजन के और अधिक साधन विकसित करने है, ऐसी ट्रेवल्स एजेंसियाँ तैयार करनी हैं जो पर्यटकों को टूर पैकेज उपलब्ध करा सकें, प्रशिक्षित गाइडों एवं कर्मचारियों की व्यवस्था होना आवश्यक है क्योंकि पर्यटन विकास के लिये अतिथि सत्कार एक महत्त्वपूर्ण कारक है।

सन्दर्भ सूची

1. प्रतियोगिता दर्पण, सितम्बर 2021
2. कुरूक्षेत्र पत्रिका, जून 2022
3. योजना पत्रिका, अप्रैल 2020
4. भारत के पर्यटन स्थल, लेखक अरूण सागर
5. नईम कुरैशी, ग्वालियर के आसपास
6. भारत पर्यटन सांख्यिकी, 2021
7. भाटिया, ए.के. टूरिज्म इन इंडिया, हिस्ट्री एण्ड डवलपमेन्ट।
8. जिला सांख्यिकी पुस्तिका ग्वालियर, 2022
9. वन्दना शुक्ला – पर्यटन भूगोल, मानवतावादी शोध एवं विकास संस्थान शिवनगर इलाहाबाद।